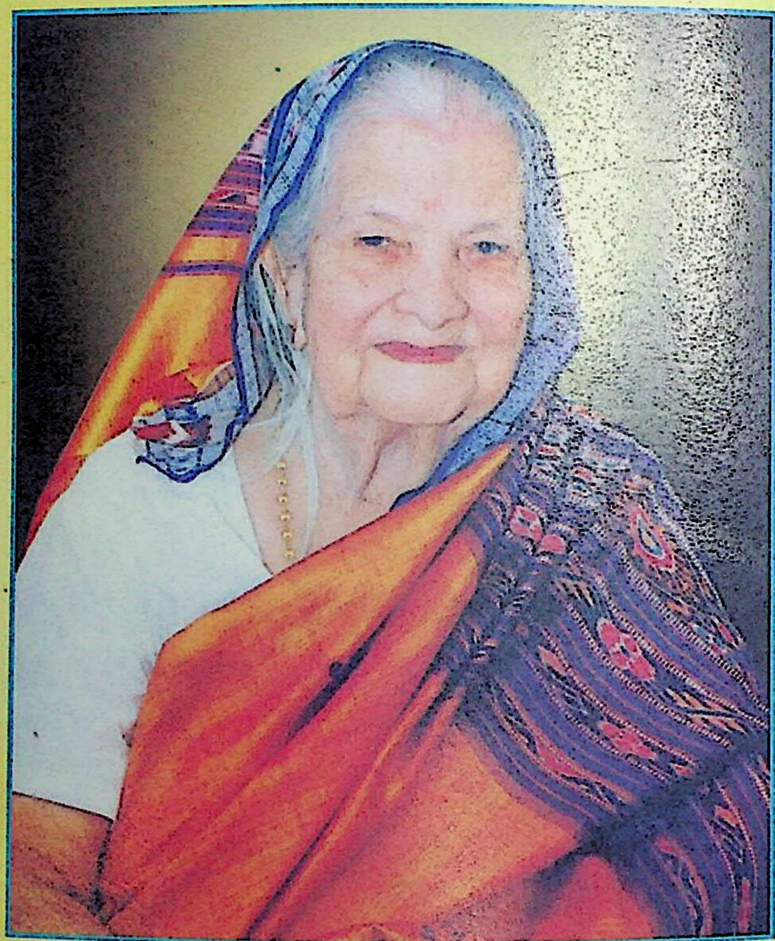
सफल जीवन

शान्ति अग्निहोत्री



श्रद्धेय माता शान्ति अग्निहोत्री

फरवरी 1918 — 4.12.2003

सफल जीवन

शान्तिदेवी अग्निहोत्री



सफल जीवन

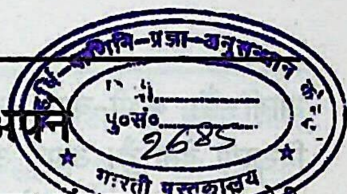
शान्ति देवी अग्निहोत्री

प्रकाशक :
दर्शन कुमार अग्निहोत्री
बी-5, प्रीत विहार, दिल्ली-110092

प्रथम संस्करण 1994
द्वितीय संस्करण 2007

मूल्य : 20/- रुपये (बीस रुपये) मात्र

मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करौलबाग, नई दिल्ली-5
दूरभाष : 41548504 मो. 9810580474 से मुद्रित



शब्द अपने-अपने

प्रस्तुत है 'सफल-जीवन' का दूसरा संस्करण। इसमें मेरी माँ श्रीमती शान्ति अग्निहोत्री के पद भजन-गीत संकलित हैं। ये उनके जीवन-काल में समय-समय पर लिखे गये थे। इनमें उन्होंने ज़िन्दगी के कई रूपों का चित्रण किया है। खुशी-उदासी के नितान्त निजी-पल, जो हर जिन्दगी में समुद्री-लहरों की तरह आते-जाते रहते हैं। इसमें पहला भजन 'अखण्ड-अग्नि' के नाम से है, जो गुरुकुल एटा के जन्म शताब्दी पर लिखा गया था। इसमें गुरुकुल भी है और उसकी भव्य यज्ञशाला भी है। कहीं स्तुति है, कहीं प्रार्थना है, कहीं मानव-जीवन पाकर भी कुछ न कर पाने की व्यथा है। उन्हें खेद है कि मानव जीवन पाकर भी मनुष्य ईश्वर को भूल जाता है। ईश्वर की कृपा बिना वह इधर-उधर भटकता रहता है। एक को भुलाया नहीं तो सभी दुःख आये नहीं।

व्यक्ति की अपनी सन्तान से बहुत सारी अपेक्षाएं होती हैं। वे भी अपनी सन्तान से बहुत कुछ आशाएं रखती हैं, विशेषकर अपने सुपुत्र दर्शन-कुमार से।

उन्हें यह भी मालूम है कि ज़िन्दगी बहुत छोटी-सी है उन्हें बहुत-से काम करके, फिर उसी जगह लौट जाना है, जहां से वे

आयीं हैं। कभी-कभी उन्हें अपनी ज़िन्दगी में बहुत अन्धेरा दिखायी देता है। अपने आराध्य से गुहार लगाती हैं कि उसके स्थान पर उजाला भर दे। यह सभी जानते हैं कि बचपन हमेशा तरुणाई से गुज़रता हुआ, वृद्धावस्था तक पहुंच यह शरीर रूपी सुन्दर घर छूट जाता है और मन पाखी न जाने कौन-से देश में चला जाता है। और हम देखते रह जाते हैं कि वाणी अभी-अभी बोल रही थी, वह मौन क्यों हो गयी? वे यह भी सोचते हैं कि प्रभु के दीदार भी इसी चोले में ही होते हैं। वे यह भी कहती हैं कि संसार तो बेगाने देश की तरह है उन्हें तो अपने देश जाना है। मैं नहीं जानती कि वे इस समय कौन-से देश में होंगी पर वे अपने महल-चौबारे सब कुछ छोड़ चली गयी हैं।

उनके भजनों में ओ३म् के प्रति गहरी निष्ठा है। जब-जब भी वे अन्तर्मुखीहो गाती हैं उनके दिल से गीत-संगीत की अजस्र धारा बह निकलती है। उन्हें अपनी मृत्यु पर पूर्वाभास हो गया। मृत्यु दबे पांव आई और उनकी उंगली पकड़ अपने साथ ले गयी और वे भी बिना कुछ कहे-सुने उनकी साथ चली गयीं। जाने से पहले वे बार-बार कई भक्तों का स्मरण करतीरहीं, उस समय उनके चेहरे पर बच्चों-सी निश्छल मुस्कान थी। शायद वे खुद से यही सवाल करती रहीं, बता तेरा अपना कौन है? इन गीतों में में कहीं वसन्त दिखायी देता है और कहीं दुःख का झरना बहता है।

ज़िन्दगी के घोर सूखे से भक्ति रस फूटता है इसमें कोई सन्देह नहीं है। उनके गीतों में सरल-सहज भावों का अद्‌भुत खजाना छिपा हुआ है। वे जब चाहतीं मोती जैसे खूबसूरत शब्द अपने निकटवर्तियों को सौंपतीं, जैसे कि वे अपने मिष्टान्न अपने ही बच्चों को दे रही हैं। उन्होंने विधिवत् शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। लेकिन ज़िन्दगी खट्टे-मीठे अनुभवों ने उन्हें अर्थशास्त्री और शिक्षाविद् बना दिया था। उन्होंने न तो काव्य-शास्त्र और न ही छन्द-शास्त्र का अध्ययन किया था लेकिन वे एक-एक शब्द को चुनकर लातीं। सम के साथ सम और विषम के साथ विषम।

मैं इन गीतों के बारे में क्या लिखूं? इनकी गहराई में, मैं सिर्फ डूब सकती हूं, उनके बारे में मैं लिख नहीं सकती। इस समय मेरी कलम को जो सूझा, वह सब-उसने आपको परोस दिया है। माँ के अपने शब्द हैं और मेरे अपने शब्द। ये दोनों के शब्द आपको कुछ सुनायेंगे। यदि आप सुनना चाहेंगे, ज़रूर सुन सकेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी माँ को नमन करती हूं।

सादर,

राज बुद्धिराजा

जी-२३३, प्रीत विहार

दिल्ली-११००९२

आमुख

मुझे प्रसन्नता है कि वन्दना के पल दूसरा भाग आपके हाथों में है। गीतों का रचना-श्रेय मेरे पूज्य गुरुदेव आदरणीय महात्मा प्रभुआश्रित जी को है, जिनके निश्छल स्नेह और सहज मुस्कान ने मेरे हर कंटकाकीर्ण पथ को चलने के लिए सुगम कर दिया था। इन गीतों का जन्म 1954 में हुआ था, जब मैं जीवन के आन्तरिक क्षणों में जीने लगी थी। उन्हीं आन्तरिक क्षणों में कोई भी व्यक्ति जीने लगेगा तो मैं अपना श्रम सार्थक समझूँगी।

–शान्ति अग्निहोत्री
'स्वस्ति'
बी–५, प्रीत विहार
नई दिल्ली

अनुक्रम

स्तुति

मैं पीवाँ अमृत प्याली,
मेरा श्वास न जाए खाली।
प्रेम प्याला भर-भर पीवाँ,
ओ३म् का नाम मिले ताँ जीवाँ॥
जिस दी शान निराली॥ मेरा....॥

श्वास-श्वास में ओ३म् सिमरकर।
प्रभु चरणों में सीस झुकाकर॥
देखाँ ज्योति प्यारी॥ मेरा....॥

यम-नियमों का पालन करके।
सत्य धर्म हृदय में भर के॥
चढ़ जाए नाम की लाली॥ मेरा....॥

शिव संकल्प बने मन मंदिर।
ईश्वर देखाँ घट के अंदर॥
तेरे दर पर अलख जगाली॥ मेरा....॥

अखंड अग्नि

(अर्द्धशताब्दी गुरुकुल यज्ञ तीर्थ, एटा)

गुरुकुल की भव्य यज्ञशाला।
गुरुकुल की भव्य यज्ञशाला॥

प्रभु कृपा से यह शुभ दिन आया।
सामवेद का यज्ञ रचाया॥
महापुरुषों की है छत्रछाया।
अनुपम है साज सजाया॥ गुरु...॥

ब्रह्मानन्द दंडी थे संन्यासी।
दृढ़ संकल्प ईश्वर विश्वासी॥
यज्ञशाला के खम्बे चौरासी।
जग में किया उजियाला॥ गुरु...॥

पास में पैसा टका न पाई।
चहुँ दिश यज्ञ की धूम मचाई॥
दूर से बहुत भाई-बहनें आईं।
हुआ वेदों का यज्ञ निराला॥ गुरु...॥

गुरुकुल खोल किया प्रचार।
बच्चों को मिला माँ का प्यार॥
बुद्धि में भर सत्य विचार।
प्रेम से सबको पाला॥ गुरु...॥

ब्रह्मचारी विद्वान बने हैं।
संयम तप से गुणवान बने हैं॥
सेवा करके महान बने हैं।
कर में ध्वज ओ३म् निराला॥ गुरु...॥

राम दत्त बागीश प्यारे।
सूर्यदेव कुलवासी सारे॥
वेद धर्म पर तन-मन वारे।
धोएँ सबका मन काला॥ गुरु...॥

दीक्षानंद जी का प्रबंध।
गगन में यज्ञ की भरी सुगंध॥
चढ़ जाए प्रभु भक्ति का रंग।
पी वेद का अमृत प्याला॥ गुरु...॥

रोम-रोम में यज्ञ भर जाए।
अंदर-बाहर नज़र प्रभु आए॥
तीनों ताप सभी मिट जाए।
अंग-अंग में हो उजियाला॥ गुरु...॥

प्रार्थना

प्रभु मेरे मन विच ज्योत जगा दे।
दुई वाला परदा मेरा दूर हटा दे।।

बचपन खेल खोया, बीज न खेती बोया।
दिन खाए रात सोया, जन्म अकारथ खोया।।
प्रेम प्याला मुझे अपना पिला दे।। प्रभु....।।

विषयाँ विकाराँ विच उमर गुजारी ऐ।
तेरा नाम भूल गई होश बिसारी ऐ।।
मोह-माया दूर कर प्रेम बढ़ा दे।। प्रभु....।।

बालिका अबोध बन शरण में आए हैं।
दीन दयाल प्रभु सीस झुकाए हैं।।
सारा ही अज्ञान मेरा दूर हटा दे।। प्रभु....।।

भूल गई

हीरा अनमोल पाके नाम भुल गई।
विषयाँ दे विच जिन्दगानी रुल गई।

गर्भ दा इकरार मैनूँ याद न आया।
झूठा है संसार यह भी ख्याल न आया।।
मित्राँ नाल प्यार पाके नाम भुल गई।। विषयाँ....।।

कंचन जैसी काया प्रभु दित्ती तुमने।
सुख-संपत्ति माया दित्ती तुमने।।
नश्वर माया देख तेरा नाम भुल गई।। विषयाँ....।।

सारे विषय रल के मैनुँ बड़ा सतावंदे।
तेरा नाम जपदी नुँ आन भुलावंदे।।
खाया-पीया सो गई मैं नाम भुल गई।। विषयाँ....।।

मन मंदिर में आके भगवन् मुझे सुधारो जी।
लखाँ पापी तारे भगवन् मुझे भी तारो जी।।
रचना न्यारी देख तेरी शान भुल गई।। विषयाँ....।।

प्रार्थना

मेरी यह भावना भगवन्,
तुझे अपना बनाऊँ मैं।
तेरे चरणों में आकर के
गीत भक्ति के गाऊँ मैं॥

जो रिश्तेदार हैं मेरे
सभी मतलब के साथी हैं।
मेरी ममता हटा भगवन्,
तेरे संग प्रीत लाऊँ मैं॥

यह धन-दौलत, महल, गाड़ी,
सभी का क्या ठिकाना है।
प्रभु अपना मुझे बल दो,
आसक्ति को हटाऊँ मैं॥

मेरा तन-मन तेरे सिमरन,
में होवे रात-दिन भगवन्।
मेरे सब श्वास हो अपने,
जीवन ज्योति जगाऊँ मैं॥

पुकार

भगवन जब से तुझे बिसारा, तब से चैन न पाया है॥

जन्म-जन्म के धक्के खाए, कितने भारी पाप कमाए।
पड़ी भँवर में दूर किनारा, भारी संकट आया है॥

न कुछ उत्तम कर्म कमाया, वक्त गया फिर हाथ न आया।
कुछ भी सोचा नहीं विचारा, ऐवें जन्म गँवाया है॥

धन-दौलत ने साथ भी छोड़ा, प्यारे मित्रों ने मुख मोड़ा।
सुख ने मुझसे किया किनारा, दुःख ने पाँव फैलाया है॥

करुणामय मुझ को यह वर दो, मेरी बुद्धि मेधा कर दो।
पल-पल गाऊँ ओ३म् प्यारा, जिस दा अंत न पाया है॥

जन्मदिन

बेटा दर्शन मेरे प्यारे, समझो माँ के ज़रा तुम इशारे।

मेरी उत्तम संपत्ति ही तू है। धन माल शक्ति भी तू है।
जिगर के टुकड़े हो आँखों के तारे॥ समझो....॥

ऊँचे लोक से तू ही आया, धर्म-कार्यों में हमको लगाया।
सत्संगों के देखे नज़ारे॥ समझो....॥

कर्म उत्तम ये मिले पूर्ण योगी, कोटि जन्मों के हम भी थे रोगी।
शिक्षा दी आए प्रभु के द्वारे॥ समझो....॥

बहन-भाई मेरी गोदी आए, लेकर शिक्षा सभी सुख पाए।
कर्म के भोग हैं न्यारे-न्यारे॥ समझो....॥

ऐसी घटनाओं को तुम विचारो, ज्ञान ज्योति से मन को सुधारो।
कुदरत के समझो अद्भुत इशारे॥ समझो....॥

बुद्धि रूपी रत्न यह मिला है, लख चौरासी से यह तन मिला है।
प्राणी मात्र के बनना सहारे॥ समझो....॥

संग्राम का यह ही जीवन है जग में, नैय्या पापों की ठहरी है मध्य में।
सत्य ज्ञान से गर तू विचारे॥ समझो....॥

क्रोध और लोभ से दूर रहना, सत्य-न्याय की राह पर चलना॥
सेवा-नम्रता का भूषण भी धारे॥ समझो....॥

षट सम्पत्ति कितनी ही पाओ, समझो ईश्वर सर को झुकाओ।
जिसके उपकार हैं भारे-भारे।। समझो....।।

प्रभु भक्ति में मन को लगा दो, दुनिया के दुःख-दर्द मिटा दो।
श्वास-श्वास में ओ३म् उच्चारे।। समझो....।।

तेरी इन्द्रियों से अमृत बरसे, तेरे दर्शन को सब कोई तरसे।
सत्य को धारो बनो सबके प्यारे।। समझो....।।

बहन प्यारी से ही प्रेम करना, साथी दुःख-सुख में उनके ही बनना।
लेना जग में सदा प्रेम हुल्लारे।। समझो....।।

मेरे भावों को हृदय में धर लो गायत्री माता से मेधा का वर लो।
ब्रह्म लोक के पहुँचो द्वारे।। समझो....।।

दोहा

जन्म-मरन दो दिवस हैं, जो जाने इसका सार।
जीवन उसका सफल है, वह पहुँचे ब्रह्म के द्वार।।
सुखी रहो, आनंद रहो, सदा रहो आबाद।
शुभ आशीष यह है मेरी, न भूलो प्रभु की याद।।

माँ के उद्‌गार

माँ के उद्‌गार, करो बेटा जरा विस्तार।
माँ का नाता, माँ है जग विधाता।।

माँ की आशा, सब कर दे दूर निराशा।
माँ है सबसे प्यारी, यह जाने दुनिया सारी।।

माँ ही सब सुख देवे, सारी विपदा हर लेवे।
माँ की अभिलाषा, पूर्ण कर दे सब आशा।।

जो पावे माँ का प्यार, हों उसके सत्य विचार।
माँ का दिल, जल्दी जावे खिल।।

माँ का हित, शुद्ध कर दे चित्त।
माँ के शुद्ध विचार, कर दें भव से पार।।

करे माँ की सेवा, मिल जावे उत्तम मेवा।
माँ बिन न कोई हमदर्दी, सब दुनिया है खुदगर्जी।।

जो माँ की आज्ञा पाले, खुल जाएँ बन्धन के ताले।
माँ का आशीर्वाद, रखता सदा आबाद।।

जो माँ का ऋण चुकावे।
वह ब्रह्मलोक में जावे।।

विनय

भगवन् यह विनय है मेरी, जब प्राण तन से निकले।
मन में हो ध्यान तेरा, मुख से ही ओ३म् निकले॥

चिंता व दुःख की रेखा, मुख पर न मेरे आवे।
तेरी याद में खुशी हो, जब जान तन से निकले॥

सारे ही पापों को मैं, धो डालूँ इसी जन्म में।
उज्ज्वल हो आत्मा यह, जब प्राण तन से निकले॥

यज्ञ भावना से मेरी बाकी उमर यह बीते।
कटु और कठोर वाणी, मुख से न मेरे निकले॥

सच्चा हो प्रेम तुझसे, दर्शन करूँ मैं तेरा।
तेरी ज्योति में समाऊँ, आवागमन यह निकले॥

आगे बढ़

मन मेरे कदम बढ़ा।
भक्ति का रंग चढ़ा॥

कदम रुका तूने दुःख उठाए।
जन्म-जन्म के धक्के खाए॥
अब तो सँभल जरा॥ मन....॥

सपना है यह दुनियादारी।
मात-पिता, भाई-बहन और नारी॥
प्रभु को अपना बना॥ मन....॥

मन मेरे तेरी अद्भुत शक्ति।
तेरे अंदर जग रही ज्योति॥
इस ज्योति के दर्शन पा॥ मन....॥

वक्त है थोड़ा दूर है जाना।
ओ३म् बिना किस पार लगाना॥
प्रभु भक्ति रंग चढ़ा॥ मन....॥

सहारा

पार ब्रह्म परमेश्वर,
मेरा तुम बिन कौन सहारा।

भाई देखे बंधु देखे,
मित्र और संबंधी देखे।
देखा है जग सारा।। मेरा....।।

कैसे तुझको पाऊँ प्रीतम,
मैं पापी तुम परम पवित्र।
अन्तर बड़ा भारा।। मेरा....।।

आओ भगवन् जल्दी आओ,
डुबदी नैय्या पार लगाओ।
संकट मोचनहारा।। मेरा....।।

ज्योति

अँधेरा दूर कर भगवन्,
तेरी ज्योति जगे मन में।
दुई परदा हटा भगवन्,
झुके यह सीस चरनन में॥

अनादि काल से मेरा,
यह मन मंदिर पड़ा सूना।
बसो हृदय में हे भगवन्॥ तेरी....॥

हटा दो जाल माया का,
मिटा दो द्वेष की अग्नि।
निर्मल कर दो हे भगवन्॥ तेरी....॥

तेरी रचना को जब देखूँ,
उसी क्षण हो तेरा सिमरन।
बढ़ा दो ज्ञान हे भगवन्॥ तेरी....॥

प्रणाम

परमपिता को मेरा प्रणाम।
करते जो सबका कल्याण।।
माँगती हूँ प्रभु भक्ति का दान।। करते....।।

जन्म-जन्म से भटकी मैं फिरियाँ।
बाझ तेरे प्रभु दर-दर रुलियाँ।।
मोह-माया दियाँ गाठाँ न खुलियाँ।। करते....।।

दुनिया में मेरा कोई न हमदर्दी।
आई भिखारन बन तेरे दर दी।।
दो कर जोड़ मैं अरज़ा कर दी।। करते...।।

अवगुणहारी न तरसावो।
डूब रही प्रभु आप बचावो।।
मन मंदिर में ज्योत जगावो।। करते....।।

रे बता दे कोई

रे बता दे कोई, कहाँ गई तरुणाई।
गई-गई बस गई, लौटकर फिर न कभी वह आई॥
रे बता दे कोई....

जिसकी रक्षा के हित खाई, मेवा और मिठाई।
दूध, दही, घृत, मक्खन खाया, हलवा, खीर, मलाई॥
रे बता दे कोई....

पिस्ता और बादाम-छुहारे, ढेरों किशमिश खाई।
लड्डू, पेड़ा और इमरती, बरफी, बालूशाही॥
रे बता दे कोई....

रसगुल्ले, रसबड़े आदि पर, जिसकी रही चढ़ाई।
उस बेवफा आयु ने मुड़कर, सूरत नहीं दिखाई॥
रे बता दे कोई....

चली गई चुपचाप तोड़कर, ममता मोह मिताई।
उसे ढूढ़ते कमर झुक गई, फिर भी थाँह न पाई॥
रे बता दे कोई....

ऊँचे-ऊँचे पर्वत लाँघे, नीची नदियाँ, खाई।
अब दस अंगुल नीचा-ऊँचा, देख बुद्धि चकराई॥
रे बता दे कोई....

कान न सुने आँख नहिं देखे, पैर चले लँगड़ाई।
तन में रोग समूह समायो, मन में भूल समाई॥
रे बता दे कोई....

रे नवयुवको बात हमारी, सुनो कान में भाई।
यह तरुणाई धोखा देगी, तजकर स्नेह सगाई॥
रे बता दे कोई....

इसके जाने से पहले, कुछ कर लो अमर कमाई।
जितना लाभ ले सको ले लो, फिर न उठेगी पाई॥
रे बता दे कोई....

प्रभु दर्शन

मुझे केवल आस तुम्हारी,
प्रभु जी अब दर्शन दो।

डगमग डोले जीवन नैय्या,
तेरे बिना प्रभु कौन खिवैय्या।
मैं तो पकड़ी ओट तुम्हारी॥ प्रभु....॥

कब से तुझको ढूँढ़ रही हूँ,
ढूँढ़-ढूँढ़ कर हार गई हूँ।
मैं तो जन्म-जन्म की मारी॥ प्रभु....॥

सब दर छोड़ तेरे दर आई,
पापों, दुःखों से हूँ घबराई।
तेरे आगे झोली पसारी॥ प्रभु....॥

हृदय में अपने तुझको बिठाऊँ,
तुमसे जीवन ज्योत जगाऊँ।
तेरे चरणों पे जावाँ बलिहारी॥ प्रभु....॥

पुकार

तू है सच्चा पिता।
सारे संसार का ओ३म् प्यारा।
तेरा नाम है जंग से निराला।

तेरी शरण में जो कोई आवे।
मन की इच्छा वह पूरी करावे।
खाली झोली भरे चिन्ता दूर करे।
॥ बख्शनहारा ॥ तेरा नाम.......

प्राणी मात्र को तेरा सहारा।
तूने डुबदे जीवों को है तारा।
जिसने पकड़ा था तेरा सहारा।
उस पर करुणा करी, सारी विपदा हरी।
॥ बख्शनहारा ॥ तेरा नाम.......

मैं भिखारन तेरे दर पे आई।
मेरा दुनिया में न कोई सहाई।
दान भक्ति का दे, अपनी शरण में ले।
॥ बख्शनहारा ॥ तेरा नाम.......

तेरा नाम है जग से निराला।

प्रभु शरण

लगा रहे प्रभु चरणाँ दे नाल,
मन मेरा लगा रहे।

घर विच होवे खजाना शाही।
नौकर-चाकर दूध-मलाई।।
भावें होवाँ कंगाल।। मन....।।

रसभरियाँ मिठाइयाँ खावाँ।
छत्तीस पदार्थ रसना लावाँ।।
होवे साग उबाल।। मन....।।

मखमल रेशम पट्ट हडावाँ।
चाहे तन पर लीराँ पावाँ।।
या हो वृक्षाँ दी खाल।। मन....।।

सिमरन

मेरा श्वास-श्वास लग जावे,
प्रभु जी तेरे सिमरन में।

इक-इक श्वास अमलोक जावे।
जाकर वापस फिर न आवे॥
फिर बैठी पछतावे॥ प्रभु....॥

लख चौरासी भोग के आई।
शुभ कर्मों से नर देह पाई॥
प्रभु हृदय में बस जावे॥ प्रभु....॥

बचपन में यह श्वास गँवाएँ।
यौवन में सब विषय सताएँ॥
अब तो काल बुलावे॥ प्रभु....॥

प्रभु जी आई शरण तुम्हारी।
अब तो राखो लाज हमारी॥
परम आनंद आ जावे॥ प्रभु....॥

देश बगाना

देखीं मना कित्थे भुल न जाँवीं।
अपना नहीं देश बेगाना। देश बेगाना।।

पाँच तत्वों का यह पिंजरा बनाया।
आत्म पक्षी बीच बिठाया।।
मार उडारी उड़ जाना। इसने उड़ जाना....

जन्म-जन्म से तू भुलदा आया।
भुल कर प्रभु दा ज्ञान न पाया।।
इक दिन होवेगा पछताना। तेरा....

मात-पिता, भाई-मित्र प्यारे।
महल खजाने पुत्र प्यारे।।
इक दिन सब नूँ है छड जाना। तूने....

सँभल ज़रा अब प्रभु गुण गा ले।
मन मंदिर में ओ३म् बसा ले।।
ऐसा समय फिर नहीं आना....

प्रभु शरण

तेरे द्वारे ते आ गई, रखनहारा तू ही तू।
सारे ही जग नूँ देखिया, सब से प्यारा तू ही तू॥

पापाँ दे घुमर घेर विच, बदियाँ दे कोल अँधेर विच।
बेड़ी है डगमग डोलदी, आस किनारा तू ही तू॥ तेरे....॥

खाली द्वारे तों मोड़ न, तेरे बिना कोई होर न।
मैनूँ है तेरा आसरा, मेरा हरयारा तू ही तू॥ तेरे....॥

मैं निमाणी दा मान तू, अपना वृद्ध पहचान तू।
चरनाँ दी प्रीती दा दान दे, दाता दुलारा तू ही तू॥ तेरे....॥

अमलाँ दे लेखे न फोलना, ऐबाँ दे कंडे न तोलना।
औगुणहारा जहान है। बख्शनहारा तू ही तू॥ तेरे....॥

बिगड़ी

मेरी बिगड़ी, मेरी बिगड़ी, मेरी बिगड़ी बना देना।....॥

मिलनी की बनी बिगड़ी, प्रभु का नाम लेने से।
मेरे मन में प्रभु आकर, दर्श अपना दिखा देना॥ मेरी....॥

मीरां की बनी बिगड़ी, प्रभु के गीत गाने से।
विषय सारे हटाकर के, प्रभु अमृत पिला देना॥ मेरी....॥

माया में फँसी अब तो, करो कृपा प्रभु मुझ पर।
मेरा जीवन करो उज्ज्वल, प्रेम गंगा बहा देना॥ मेरी....॥

तेरा है नाम करुणामय, जगत के सारे दुःखहर्ता।
मेरी नैय्या भँवर में है, किनारे पर लगा देना॥ मेरी....॥

महान

भगवन् हमारी जाति को,
बलवान बना, बलवान बना।
जाति की हर इक देवी को,
गुणवान बना, गुणवान बना॥

हर मानव तेरा भक्त बने,
सत्य धर्म-कर्म में प्रीति हो।
अज्ञान का परदा हट जाए,
इन्सान बना, इन्सान बना॥

हो जीवन का उद्देश्य यही,
तेरे अमृत को पाएँ भगवन्।
मन मंदिर में तेरी ज्योत जगे,
दिव्य रत्नों से गुणावान बना॥

हृदय में तेरा प्यार होवे,
प्रभु वेद की अमृत वाणी का।
तन मन धन को अर्पण कर दूँ,
मेरा जीवन शुद्ध महान बना॥

प्रभु बसो

आन बसो मेरे मन में,
भगवन् आन बसो मेरे मन में।

जन्म-जन्म की हूँ भटकाई,
भगवन् तुझसे पड़ी जुदाई।
आयु गई विषयन में।। भगवन्....।।

चारों ओर संकट ने घेरा,
प्रभु जी साथी कोई नहीं मेरा।
नैय्या पड़ी है भँवर में।। भगवन्....।।

सुन्दर फर्श बिछा दुनिया का,
प्यारे साथी धन यौवन का।
कैसे करूँ सिमरन मैं।। भगवन्....।।

प्रभु जी करुणा हाथ बढ़ाओ,
गोद में अपनी मुझे बिठावो।
ध्यान रहे चिन्तन में।। भगवन्....।।

प्रभु महिमा

दीनदयाल दया के सागर,
सर्व सुखों की खान।
महिमा तेरी ईश महान।। महिमा....।।

सूर्य चाँद बनाए तारे,
पर्वत जंगल दरिया सारे।
पत्ते-पत्ते की कतरन न्यारी,
कैसे करूँ बखान।। महिमा....।।

रचना तेरी न्यारी-न्यारी,
लीला तेरी प्यारी-प्यारी।
सब जग तेरी याद मनावे,
करते हैं गुणगान।। महिमा....।।

भगवन् तेरी अद्भुत माया,
अंत किसी ने पार न पाया।
ऋषि मुनि भी हार गए सब,
कर-कर तेरा ध्यान।। महिमा....।।

पूर्ण है ब्रह्माण्ड तुम्हारा,
सब जग का तू पालनहारा।
सार न जानूँ तेरी भगवन्,
मैं बालक नादान।। महिमा....।।

प्रभु बिन कोई नहीं

मेरे मन तू बन जा फकीर।
बिना प्रभु कोई न बनेगा॥

पाँच तत्वों का पिंजरा बनाया।
पाँच तत्वों का शरीर॥ बिना....॥

धन-दौलत तेरे काम न आवे।
जावे न प्यारे-प्यारे वीर॥ बिना....॥

धियाँ पुत्तर तेरे खड़े सिरहाने
नैनाँ तो वगदा है नीर॥ बिना....॥

धर्मराज ने लेखा वी मँगड़ा।
दिल विच लगसन तीर॥ बिना....॥

धर चिता सारे आग लगासन।
झर-झर बलदा शरीर॥ बिना....॥

परम पिता की शरण तू आ जा।
वो ही हरेंगे सारे पीर॥ बिना....॥

ओ३म् जप

ओ३म् जपन मैं आई। वक्त गँवा बैठी।।

गर्भ दे विच इकरार किया था,
प्रभु जी तुझको याद किया था।
मात लोक विच आई।। वक्त....।।

खेल-कूद में बचपन बीता,
यौवन दे विच नाम न लीता।
अपनी होश भुलाई।। वक्त....।।

मोह और् लोभ ने जाल बिछाया,
काम-क्रोध ने डेरा लाया।
पापाँ दी गठरी चाई।। वक्त....।।

निर्मल कर दो मेरा तन मन,
सच्ची प्रीत लगाऊँ भगवन्।
भिक्षा लेने आई।। वक्त....।।

प्रभु शरण

हम आए हैं शरण तुम्हारी,
प्रभु रखना तू लाज हमारी।

तेरे चरनों में प्रीती लगावें,
अपना जीवन न व्यर्थ गँवावें। हाँ.....
दिल में होवे तेरा प्रेम भारी।। प्रभु....।।

मेरी नैय्या को पार लगावो,
प्रभु अपना ही अमृत पिलावो। हाँ....
तेरे द्वारे पे झोली पसारी।। प्रभु....।।

मन मंदिर में आसन हो तेरा,
दूर कर दो मेरा अँधेरा। हाँ....
तेरी ज्योति की शोभा हो न्यारी।। प्रभु....।।

प्रभु दया

प्रभु जी तुम बड़े दयालु हो,
तेरा अंत नहीं पाया।
तेरा यश गाया वेदों ने,
नेति-नेति कर ध्याया॥

पाप कर्म में रही हमेशा,
आई हूँ दर तेरे।
प्रभु जी फिर भी दया दिखा कर
भरे भंडारे मेरे॥ प्रभु जी....॥

मन से सच्ची प्रीति भगवन्,
मैंने नहीं लगाई।
प्रभु जी फिर भी दया दिखाकर,
मेरी लाज बचाई। प्रभु जी....॥

जिसको मैंने समझा अपना,
कोई न बनिया मेरा।
प्रभु जी मुझ पर दया ही कर दो,
छोडूँ न दर तेरा॥ प्रभु जी....॥

माता जी की बरसी

स्वर्गीय माता प्यारी-प्यारी, श्रद्धा फूल हैं भेंट तुम्हारी।
यज्ञ कर तेरी याद मनाते, प्रेम भर तेरे गुण को हैं गाते।
तेरे जीवन में शिक्षा थी न्यारी।। स्वर्गीय....।।
छोटे बच्चे थे पैसा भी पाई न, बिन प्रभु के कोई भी सहाई न।
घर में तंगी थी और लाचारी।। स्वर्गीय....।।
चक्की पीस कर रातें गुज़ारीं, आहें भर-भर करी आहो ज़ारी।
दुःख-संकट में दिन बीते भारी।। स्वर्गीय...।।
कष्ट पे कष्ट कितने ही आए, आगे किसी के न हाथ फैलाए।
धीरज को धारा, हिम्मत न हारी।। स्वर्गीय....।।
दुःख के बादल उड़े, सूरज चमका, इक बच्चे पे हुई प्रभु कृपा।
सच्ची सेवा करे प्रेम भारी।। स्वर्गीय....।।
यह भक्ति का प्रचार करते, गायत्री मंत्र का भी विस्तार करत्ते।
भक्त प्रेमी बने नर और नारी।। स्वर्गीय....।।
महेनत करके बच्चों को पाला, तेरे प्यार का ढंग था निराला।
प्रभु द्वारे पर झोली पसारी।। स्वर्गीय....।।
तेरी शिक्षाएँ जीवन में लाएँ, दुःख-सुख में साथी प्रभु को बनाएँ।
झुके चरणों में वह न्यायकारी।। स्वर्गीय....।।

मन नीवाँ

मन नीवाँ हो के चल।

नीवियाँ नूँ रब मिलदा।
नीवियाँ नूँ लगदे फल।।

बन पवित्र सत्य धारण कर।
जैसे निर्मल जल।। नीवियाँ....।।

कल्पवृक्ष है यह तन नगरी।
लगेंगे चारों फल।। नीवियाँ....।।

प्रभु की रचना है सिखलाती।
न धोखा दे न छल।। नीवियाँ....।।

कर्म किए को भोग खुशी से।
प्रभु के नियम अटल।। नीवियाँ....।।

तन मन धन हो भेंट प्रभु की।
जीवन हो जाए सफल।। नीवियाँ....।।

ओ३म् सुखदायी

मनुआ ओ३म् सदा सुखदायी।

दुःख में साथी, सुख में दानी।
संग में ओ३म् सहाई।। मनुआ....।।

जन्म-मरन में ओ३म् ही रक्षक।
बंधु सखा और भाई।। मनुआ....।।

दूर करे सब पल में संकट,
जो सच्ची प्रीत लगाई।। मनुआ....।।

लोक लोकान्तर में है व्यापक।
योगी समाधि लगाई।। मनुआ....।।

प्रभु मालिक

मन मेरे बन जा तू,
मालिक भगवान् तेरा।
प्रीतम दा बन जा तू,
करुणानिधान तेरा॥

लोक-परलोक अंदर,
भगवन् है तेरा साथी।
बिन उस दे देख मनाँ,
कौन जहान तेरा॥ मन....॥

धन दुनिया रिश्ते नाते,
सपने की नाईं मनुवा।
झूठे ने मित्र सारे,
कर दे नुकसान तेरा। मन....॥

प्रीत लगा ले सच्ची,
भगवन् को कर ले अपना।
मिट जाए लख चौरासी,
आवन ते जान तेरा॥ मन....॥

दिव्यांशु मुंडन संस्कार

प्रभु कृपा अपार शुभ दिन आया है।
होया मुंडन संस्कार, शुभ दिन आया है॥

अग्निहोत्री परिवार पर है, प्रभुआश्रित की छत्रछाया।
सब कहते हवन वाला घर है, सुन्दर यज्ञ रचाया॥ शुभ....॥

अग्निहोत्री जी की अब यह है चौथी पीढ़ी।
जप धर्म तप करके, चढ़ जाए स्वर्ग की सीढ़ी॥ शुभ....॥

स्वामी दीक्षानंद जी इस घर पर सदा ही कृपा करते।
समय-समय पर वेद उपदेश सुनाकर, अमृत रस को भरते॥ शुभ....॥

प्यारे आए, सारे आए, आई हैं बहनें सारी।
आशीष वचन के फूल बरसाए, शोभा हुई है भारी॥ शुभ....॥

कुमारी दर्शन सरोज सुनीता पुनीता, तरुण वरुण हैं डौली।
पर उपकार प्रभु चिन्तन धर्म से दिन-दिन हो खुशहाली॥ शुभ....॥

दिव्यांशु में हो चन्द्र शीतलता, सूर्य समय से करे उजियारा।
विद्या धर्म में हो नम्रता, प्राणी मात्र का बने सहारा॥ शुभ....॥

आर्यों का मेला

आर्यों का मेला सहेली चलो देख लें।
सारे चलो देखने, सहेली चलो देख लें॥

सुना है कई वेदपाठी विद्वान आए हैं।
साधु संत महात्मा विद्वान आए हैं॥
सत्य वचन सुहेला॥ सहेली....॥

प्रभु कृपा से ही कैसा सुन्दर यज्ञ रचाया है।
आगे-पीछे दाएँ-बाएँ मंडप सजाया है॥
सुगंध गगन में फैला॥ सहेली....॥

सारे श्रद्धा प्रेम से आहुति भर-भर पाते हैं।
स्वाहाकार बोल कर, प्रभु गीत गाते हैं॥
धुल जाए मन मैला॥ सहेली....॥

दोष, दुर्गुण-अवगुण सारे दूर भाग जाएँगे।
सत्य दया न्याय से भक्ति रंग चढ़ाएँगे॥
सखा हो ओ३म् अकेला॥ सहेली....॥

आर्यों का मेला, चलो जी सारे देखने।

प्रभु दया

प्रभु जी तुम बड़े दयालु हो।
दया का अंत नहीं पाया।।

प्रभु करुणा हस्त बढ़े तेरा,
रोम-रोम हरषाए।
मिट जाए सब घोर अँधेरा,
दिव्य ज्योति जग जाए।। प्रभु जी....।।

करुणा हाथ रखो प्रभु जिस पर,
मन निर्मल हो जाता।
नैनों में आँसू, झुक जाए सर,
परम आनंद को पाता।। प्रभु जी....।।

दया की धारा अमृत बरसे,
बुद्धि में हों सत्य विचार।
प्रभु मिलन को आत्मा तरसे,
रहे न कोई विकार।। प्रभु जी....।।

करुणा कर दो मेरे भगवन्,
मैं तुझमें रम जाऊँ।
सब कुछ करके तेरे अर्पण,
ब्रह्म धाम को पाऊँ।। प्रभु जी....।।

ज्योतिर्मय

मम जीवन प्रभु ज्योतिर्मय हो।
ज्योतिर्मय हो, मंगलमय हो।। मम....।।
गायन करूँ मैं गायत्री मंत्र।
सर्व सिद्धि का है यह यंत्र।
ध्वनि ओ३म् की चले निरंतर।
चाहे पथ कितना संकटमय हो।। मम....।।
निराकार और निर्विकार हो।
सर्व सृष्टि के तुम आधार हो।।
प्राणी मात्र के प्राण आधार हो।
सर्व व्यापक प्रभु तेरी जय हो।। मम....।।
छूटे कभी न आँचल तेरा।
निरखा करूँ मैं सदा सवेरा।
तन मन धन हो जाए तेरा।
जन्म-मरण का कभी न भय हो।। मम....।।
पूजा की मैं विधि न जानती।
मिट जाए सब सकल भ्रांति।
मन में रहे सदा प्रभु शान्ति।।
मृत्यु का जब अंत समय हो।। मम....।।

तेरा कौन है

किसे करता मनुवा प्यार, प्यार, प्यार।
तेरा कौन है, जी तेरा कौन है॥

मनुष्य जन्म अमोलक पाया।
प्रभु भजन बिन व्यर्थ गँवाया॥
फँस गया मँझधार, धार, धार॥ तेरा....॥

प्यारे देखे सारे देखे।
ऊँचे महल चौबारे देखे॥
इनमें नहीं कुछ सार, सार, सार॥ तेरा....॥

चार दिनों की भरी जवानी।
धन माया है आनी-जानी
इन सबसे कर उपकार, कार, कार॥ तेरा....॥

अंतर्मुख हो प्रभु चिन्तन कर ले।
प्रभु भक्ति का अमृत भर ले॥
हो जाए भव से पार, पार, पार॥ तेरा....॥

मेहनत कर कर धन कमाया।
बिन भक्ति के समय गँवाया॥
मिले जन्म न बार बार ॥ तेरा.... ॥

चरखा

कतो नी गाँधी दा चरखा।
आया नी रंगीला चरखा।।
वाहवा नी गाँधी दा चरखा।।।

चरखा खूब चलाया, गाँधी चरखा खूब चलाया।
सुते हिंदू नूँ आन जगाया, दुश्मन देख खड़ा घबराया।। नी गाँधी....।।

सूतर दी है तार जेहड़ी सूत दी है तार।
कर दी वार समुद्र पार, साडा एहो है हथियार।। नी गाँधी....।।

चरखा प्यारा-प्यारा, साडी रोजी दा सहारा।
कर दा टब्बर दा गुज़ारा, लगदा सानूँ बहुत प्यारा।। नी गाँधी....।।

सुन लो हिन्दुस्तानी, सारे सुनँ लो हिन्दुस्तानी।
कीती गाँधी ने कुरबानी, रखना याद ऐ राम कहानी।। नी गाँधी....।।

उमरिया

चली जा रही है उमर, धीरे-धीरे।
पल-पल आठों पहर, धीरे-धीरे।

बचपन गया और जवानी भी जाए।
बुढ़ापे का होगा असर, धीरे-धीरे।। चली....।।

तेरा हाथ-पाँव में बल न रहेगा।
मंद होंगी आँखें नज़र, धीरे-धीरे।। चली....।।

अंग जो तुम्हारे, शिथिल होंगे सारे।
झुक जाएगी कमर, धीरे-धीरे।। चली....।।

जो आया यहाँ उसको जाना पड़ेगा।
खतम होगा जीवन सफर, धीरे-धीरे।। चली....।।

मधुरस प्याला

ओ३म् मधुरस प्याला, मुझ में भर जाए।
धुल जाए मन काला, नैय्या तर जाए॥

जन्म-मरण का ओ३म् ही साथी।
बन जाऊँ मैं दृढ़ विश्वासी॥
चढ़ जाए रंग निराला॥ मुझ....॥

रोम-रोम में ओ३म् निहारूँ।
तन-मन की सुध-बुध बिसारूँ॥
अंग-अंग में हो उजियाला॥ मुझ....॥

जीवनदाता ओ३म् है मेरा।
मैं मेरी न रहे अँधेरा॥
दिव्य चिन्तन हो आला॥ मुझ....॥

भर-भर सोम प्याला पीवाँ।
ओ३म् नाम गा-गा कर जीवाँ।
मन बन जावे मतवाला॥ मुझ....॥

शान्ति कैसे हो

ओ३म् होवे मेरा, मैं रहूँ ओ३म् की।
सब दिशा में नज़र आएगी शान्ति।

ओ३म् का ध्यान हो, कहीं न अभिमान हो।
सीस झुकता रहे, आनंद स्वर गान हो।।
मेरे रोमों में धारा बहे प्रेम की।। सब....।।

मोह-ममता आसक्ति रहे न जरा।
तेरी भक्ति करूँ तन्मय हो के सदा।।
रूठ जाएँ सभी छूट जाएँ अभी।। सब....।।

तन में हो शान्ति, मन में हो शान्ति।
आत्मा में जगा दो परम ज्योति को।
पाप धुल ज़ाएँगे, भाग्य खुल जाएँगे।। सब....।।

चिन्तन होवे तेरा, चिन्ता कोई न रहे।
मुस्कराती रहूँ, गीत गाती रहूँ।
मेरे हृदय में धारा बहे सोम की।। सब....।।

रहूँ तुझमें मगन, पल-पल होवे नमन।
पाऊँ तेरी शरण, न हो आवागमन।।
मैं न मेरी रहे, करुणा तेरी रहे।। सब....।।

प्रभु दर खोलो

खोलो खोलो रे प्रभु जी, दर खोलो रे।
कई-कई जन्मों के पाप मेरे धो लो रे॥

पर्वत जैसे मेरे पाप भारी।
मैं तो निर्बल हूँ ममता की मारी॥
ज़रा-ज़रा प्रभु मेरे पास हो लो रे॥ कई....॥

सुन्दर रचना अजब हैं नज़ारे।
करते सारे तेरे यह इशारे॥
समझूँ तुझको ज़रा मुख से बोलो रे॥ कई....॥

कण-कण में तेरा नूर रहता।
तेरी महिमा का संदेश कहता॥
मेरे हृदय में मधुरस घोलो रे॥ कईं....॥

सारे जग में तुझे मैं निहारूँ।
तेरे चरणों में सब कुछ दे डालूँ॥
सत्य ज्ञान के चक्षु मेरे खोलो रे॥
खोलो खोलो रे॥
कई..................॥

महल चौबारे

रहेंगे महल न चौबारे रहेंगे।
मेरे संगी-साथी न प्यारे रहेंगे।।

दो गज़ कफ़न मेरा सामान होगा।
अपने हैं जो वह भी न्यारे रहेंगे। रहेंगे....।।।

चिता पर धरा तन झर-झर जलेगा।
उठते धुएँ के फव्वारे रहेंगे।। रहेंगे....।।

जन्म से मरण तक जो भी खेल खेले।
किए कर्मों के ही नज़ारे रहेंगे।। रहेंगे....।।

अहं और मम में यह जीवन है बीता।
हाथों के अब न इशारे रहेंगे।। रहेंगे....।।

प्रभु के चिन्तन में, हे मन तू खो जा।
जग में तेरे प्रेम हुल्लारे रहेंगे।। रहेंगे....।।

प्रेम

प्रेमनगर में बनाऊंगी घर मैं, तज के सब परिवार।
प्रेम सखा हो प्रेम पड़ोसी, प्रेम ही सुख का सार।।
प्रेम की छत हो प्रेम का आँगन, प्रेम के चारों द्वार।
प्रेम की खिड़की प्रेम झरोखे, चहुँ दिश प्रेम फुहार।
प्रेम ही बरसे दसों दिशा से, हो प्रेम की अमृतधार।।
प्रेम की नदियाँ जी भर नाहूँ, हो सच्चे प्रेम की तार।
शील संतोष की साड़ी पहनूँ, धैर्य ही कंठ का हार।।
अनहद नाद का कुंडल होवे, श्वासों में ओ३म् झंकार।
नयनों में हो नाम की मस्ती, खुल जाए ब्रह्मद्वार।।
प्राण अपान का झूला लेकर, जुड़ जाए प्रेम की तार।
दिव्य ज्योति हो प्रभु निहारूं, नमः हो बारंबार।
सत्य ज्ञान हो अंदर ध्यान हो, फूटें मधु की धार।
सच्ची लगन से प्रभु गुण गाकर, पाऊं आनंद अपार।।
शोक और मोह न मुझे सतावे, कहीं भी न अहंकार।
प्रेम की श्रद्धा प्रेम का निश्चय प्रेम के भरे भंडार।।
प्रेम का दीपक प्रेम की बाती, प्रेम की झलक अपार।
मैं मेरा सब अर्पण कर दूँ, हृदय में पाऊं दीदार।।

हृदय आसन

प्रभु मेरे हृदय में आसन हो तेरा।
मेरे रोम-रोम में शासन हो तेरा॥

वाणी बोलूँ प्रभु तेरा गुणगान हो,
मन को धोलूँ प्रभु तेरा ही भान हो।
गैरों का न हो मुझ में ही डेरा॥ प्रभु मेरे....

मेरी बुद्धि में सत्य विचार भरो।
विषयों के भरे सब विकार हरो।
कहीं कोई भी न होवे अंधेरा॥ प्रभु मेरे....

तप संयम की जीवन में हो साधना।
अंतरमुख हो करूं तेरी आराधना।
अँग-अंग में हो तेरा बसेरा॥ प्रभु मेरे....

प्रेमभक्ति का मुझ में भरा नूर हो।
दिव्य ज्योति का अमृत भरपूर हो।
झुक जाऊं मैं दर्शन हो तेरा॥ प्रभु मेरे....

प्रभु-दर्शन

कृपा कीजे दर्शन दीजे,
प्रभु तेरा दर खटकाया है।
प्रभु तेरा दर खटकाया है,
कोई दर नज़र न आया है॥ कृपा....
युग युग से मैं भटकी आई,
कहीं अटकी कहीं लटकी आई।
दुःख पापों से हूँ घबराई॥ कृपा....
करुणामय हो करुणा तेरी।
कर दो सारी दूर अंधेरी।
दर्शन दो प्रभु करो न देरी॥ तेरा....
तू है अजर अमर अविनाशी,
अंतरयामी घट-घट वासी।
कई जन्मों की मैं हूँ प्यासी॥ तेरा....
जिसने दर तेरा खटकाया।
विनती कर-करके खुलवाया।
तेरे परम आनंद को पाया॥ प्रभु....

प्रभु-महिमा

संसार रचाने वाले ओ भक्तों के रखवाले
जय हो जय हो।।
मैं मेरी ने मार दिया,
मन हो गया काला-काला, मन..........
ज्ञान का दीप जला दो भगवन्,
हो जाए उजियाला, हो जाए.........
संसार रचाने......
तेरी कृपा से मन मेरा,
प्रभु-भक्ति में लग जाए।। प्रभु भक्ति....
विषयों का न रहे अंधेरा,
दिव्य ज्योति से हरषाए। दिव्य ज्योति....
संसार रचाने.......
तेरी करुणा से भगवन्,
यह मैं, मेरी मर जाए। मैं मेरी मर जाए।।
मेरे सन्मुख अंदर बाहर,
तू ही तू रह जाए। तू ही तू रह जाए।।
संसार रचाने.....

पारस

ओ३म् नाम का पारस छुए,
मन कुंदन बन जाएगा।
मन कुंदन बन जाएगा,
हृदय चंदन बन जाएगा।
ओ३म् नाम की इतनी शक्ति,
सब हारे न जानी हस्ती।
योगी ध्यानी और तपस्वी,
कर जोड़ नमन हो जाएगा॥ ओ३म्...
ओ३म् नाम का पारस पकड़े,
महान शत्रु फिर कभी न जकड़े।
अंतरमुख हो अमृत बरसे,
आनंद मंगल हो जाएगा॥ ओ३म्...
ओ३म् नाम ही सबसे बड़ा है,
इसके बल ब्रह्माण्ड खड़ा है।
बिन-खंबे आकाश अड़ा है,
दिव्य नाम रतन धन पाएगा॥ ओ३म्...
रोम-रोम में ओ३म् बसाएं,
सत्य ज्ञान की ज्योत जगाएं।
शीष झुका भव पार हो जाएं,
सफल जन्म हो जाएग॥ ओ३म्...

रक्षा-बन्धन

तार तार में प्रेम ही लेकर, बहन यह राखी लाई है।
है प्रतीक निस्वार्थ स्नेह का, इसकी यही बढ़ाई है।।
इन धागों के तार तार में, भरी मधुर झंकार है।
इन तारों से जुड़े हमारे, मन बुद्धि के स्वर तार हैं।।
रक्षाबंधन का पावन पर्व, हे भ्राता आज फिर आया है।
बहन की प्रेम धारा ने, हे भाई तुम्हें बुलाया है।।
शुद्ध प्रेम की आशा में भैय्या, बहन की है रेशम लड़ी।
हाथ में लेकर सुन्दर राखी, सत्य भाव में बहन खड़ी।।
यह कोई कच्चा धागा नहीं, भातृ भाव उपहार है।
स्नेह का दृढ़ सूत्र यही है, मन के कुछ उद्‌गार हैं।।
दुर्गुण अवगुण छोड़कर, प्रभु से प्रीत लगाएं।
ईश्वर से नाता जोड़कर, भक्ति का रंग चढ़ाएं।।
कुछ दिन की है जिन्दगी, सिर पर मंडरावे काल।
पल पल हो ओ३म् की बंदगी, दिव्य धन से बने खुशहाल।।
छल कपट सब दोष मिटा दें, बन जाएं निर्मल गंग।
शील संतोष सत्य गुण बढ़ा दें, हो महापुरुषों का संग।।
सुख शान्ति आनंद को पाकर, ओ३म् ही ओ३म् निहारें।
तन मन धन सब भेंट चढ़ाकर, अमृत की पीलें धारें।।

सच्चा-रंग

प्रभु अपने रंग में रंग दो।
इक बार ही मुझको रंग दो॥

ऐसा रंग दो कभी न उतरे,
ज्यों ज्यों धोऊं त्यों त्यों निखरे।
प्रभु प्रेम की सच्ची उमंग दो॥ प्रभु...

रंग बिरंगी रचना तेरी,
मन की नगरी काली मेरी।
भक्ति वाला रंग दो॥ प्रभु...

तप साधन का रंग है उज्ज्वल,
मन बुद्धि मेरी कर दो निर्मल।
शुद्ध प्रेम भर अंग अंग दो॥ प्रभु...

दिव्य ज्योति से भक्ति हो तेरी,
नाम रतन की मस्ती हो मेरी।
प्रभु अमृतधार की गंग दो॥ प्रभु....

बसंत

आई बसंत बहार। प्रभु गीत गाएं सभी।
परमेश्वर की रचना सुन्दर,
गहरे सागर भरे समुन्दर।
जान पाए न कोई सार।। प्रभु....

नई नई कलियां रंग बिरंगे फूल हैं,
जो प्रभु संग रलिया, वही इसका मूल है।
महिमा है अपरंपार।। प्रभु....

फूलों की है क्यारी क्यारी मन हरषावे,
सुगंधि है न्यारी न्यारी सबको लुभावे।
चंपा चमेली गुलनार।। प्रभु....

बंसत का संद्धेश है, नया बल नई शक्ति।
वेद का आदेश है, प्रेम से हो प्रभु भक्ति।।
मिले आनंद अपार।। प्रभु....

ओ३म् आदि अंत है, ओ३म् ही आधार है।
सृष्टि ही बेअंत है, ज्ञान का भंडार है।।
योग से पहुंचे ब्रह्मद्वार।। प्रभु...

अखियाँ

कैसी सुन्दर बनाई, प्रभु जी अद्भुत अखियाँ।
हैं यह अद्भुत अखियाँ, मुख पर सजती अखियाँ।।

आंखों का सुन्दर व्यवहार,
इसमें रहता सब संसार।
कभी न आवे ज़रा विकार।। प्रभु....

आंखों में चमके सुन्दर ज्योति,
सत्य ज्ञान के उपजे मोती।
नई नई अनुभूति है होती।। कैसी....

समदर्शी का भर दो नूर,
दुर्दर्शी हो चकना चूर।
मुझ में मधुरस हो भरपूर।। कैसी...

इसमें भरे अनन्त भंडार,
है सब ओ३म् का विस्तार।
अंतर मुख हो जाने सार।। प्रभु...

प्रभु-महिमा

है सुन्दर संसार जान न पाऊं मैं।
महिमा अपरंपार शीष झुकाऊं मैं।।

कोमल वाणी कर बुद्धि,
तेरी दया से मैंने पाई।।
न कर पाई मैं शुद्धि,
बिन सिमरन उमर गंवाई।
किया न सोच विचार।। जान....

है ज़र्रे ज़र्रे में रहता,
प्रभु फिर भी नज़र न आया।
मधुरस का झरना बहता,
है माया ने भरमाया।
मन में भरा विकार।। जान....

योगी जन भक्त प्यारे,
तेरे अमृत को पाते हैं।
विषयों से रहते न्यारे,
अंतरमुख ध्यान लगाते हैं।
मिले आनंद अपार।। जान....

वधू का स्वागत

प्रभु की कृपा अपार। आई है सुन्दर वधू॥
आई है सुन्दर वधू, इसमें भरा हो मधु।
प्रेम की टूटे न तार॥ आई.....

बहन जी व भ्राता जी की, कब से थी आशा।
खुशियों की लाई बहार॥ आई.....

सुन्दर सुन्दर बहू आई, साथ ही सौभाग्य लाई।
सत्य का ही हो व्यवहार॥ आई.....

जप संध्या यज्ञ को, श्रद्धा से करके।
पूर्वजों का हो सत्कार॥ आई.....

धन, सम्पत्ति पाकर के, शीष को झुकाते जाएं।
सदा ही करें उपकार॥ आई.....

गहना हो संतोष का, वस्त्र पहने शील का।
भक्ति की अमृतधार॥ आई.....

जीवन भी यशस्वी हो, वाणी भी वर्चस्वी हो।
पहुंचे ही ब्रह्म के द्वार॥ आई.....

प्रभु-महिमा

प्रभु यश गा रहा है, तुझे दर्शा रहा है।
जगत् यह सारा।

लोक लोकान्तर सागर भारी, सागर भारी।
उछले समुन्दर, रचना है न्यारी, रचना है न्यारी॥
झरना आ रहा है॥ तुझे.......

काली घटाएं बादल गरजे, बादल गरजे।
रिम झिम रिम झिम, अमृत बरसे, अमृत बरसे।
मन हरषा रहा है॥ तुझे......

गगन मंडल में ज्योति प्यारी, ज्योति प्यारी।
जल में ठहरी पृथ्वी भारी, पृथ्वी भारी॥
फूल मुस्करा रहा है॥ तुझे.......

बेअंत तू है प्रभु पार न पाया।
योगी ध्यानी सबने सीस झुकाया, सीस झुकाया ॥
तेरा गुण गा रहा है॥ तुझे....

भजन

प्रभु देते हैं दीदार, मानव चोले में।
मिलता आदर सत्कार, मानव चोले में।।

मानव चोला ब्रह्म का मंदिर,
परमेश्वर है इसके अंदर।
कर ले ज़रा विचार।। मानव....

मानव चोला बड़ा पवित्र,
अंतर मुख हो पीले अमृत।
जान ले इसकी सार।। मानव....

प्रातः समय प्रभु चिन्तन करके,
सीस प्रभु-चरणों में धरके।
भर ले सत्य विचार।। मानव....

श्रद्धा प्रेम से ओ३म् को ध्याकर,
सत्य ज्ञान की ज्योत जगाकर।
पहुंचे सच्चे दरबार।। मानव....

कुछ दिन की मेहमान

कुछ दिन की हूं मेहमान। प्रभु जी शक्ति दो।
न सकी तुझे पहचान। प्रभु जी शक्ति दो।
कैसा सुंदर संसार बनाया।
शोक और मोह का जाल बिछाया।
विषयों में रही गलतान। प्रभु....

बचपन यौवन बीत गया।
अंतःकरण न शुद्ध किया।
दुःख सुख में रही परेशान। प्रभु.....

चहुं दिशा विषयों ने घेरा
अज्ञान अविद्या का पाया डेरा।
कीया न जरा भी ध्यान। प्रभु....

अच्छे कर्म थे योगी मिल गये।
जन्म-जन्म के पाप भी धुल गये।
सुना वेद का ज्ञान। प्रभु....

वेद-यज्ञ को उत्तम बताया।
गायत्री मां का रहस्य बताया। प्रभु....

अंतरमुख हो किया ध्यान।
बीत गयी है आयु सारी।
चलने की अब कर ली तैयारी।
पल-पल हो तेरा ध्यान। प्रभु....

शक्ति दे दो भक्ति दे दो।
नाम रतन की मस्ती दे दो।
करो सदा गुणगान।। प्रभु....

उज्ज्वल कर दो मेरी आत्मा।
पापों का हो जाए मेरी खात्मा।
दिव्य ज्योति जगे महान। प्रभु....

अब जो दिन हैं बाकी मेरे।
फिरती रहूं न मैं अंधेरे।
पहुंचु ब्रह्म के धाम। प्रभु....

ओ३म् पूज्य वर्मा जी को वानप्रस्थ दीक्षा

(स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज)

कैसा यह शुभ दिन आया, शुभ दिन आया
सबने मंगल गाया है।
क्या सुन्दर यज्ञ रचाया यज्ञ रचाया।
रोम-रोम हरषाया है।
वर्मा जी की धर्म कमाई
प्रभु ने यह शुभ घड़ी दिखलाई।
अंदर दिव्य ज्योत जगाई।
प्रभु ने भाग्य जगाया है।। कैसा....

तप संयम साधना कर के
अंतरमुख चिन्तन करकें
तन मन को अर्पण कर ले।
जीवन सफल बनाया है। कैसा.....

प्रभु आश्रित जैसी है शक्ति
महापुरुषों की मिली है शक्ति
दुनिया की मिटी आसक्ति।
अंदर आनंद पाया है।। कैसा....

पाया गायत्री से वरदान।
लिया है परमेश्वर पहचान।
पल-पल करते हैं गुणगान।
मोह का जाल हटाया है।। कैसा..



संतान है आज्ञा कारी।
पत्नी भी सुलक्षणी नारी।
सबकी धर्म में प्रीती भारी।
सच कुल का मान बढ़ाया है। कैसा...

युग-युग जीवो अमर हो जाओ
और वेद. उपदेश सुनावो।
मुक्ति पद को पावो।
प्रभु की अनुपम गाथा हैं
कैसा यह.....

मेरी मां का अन्तिम सन्देश, आदेश, उपदेश

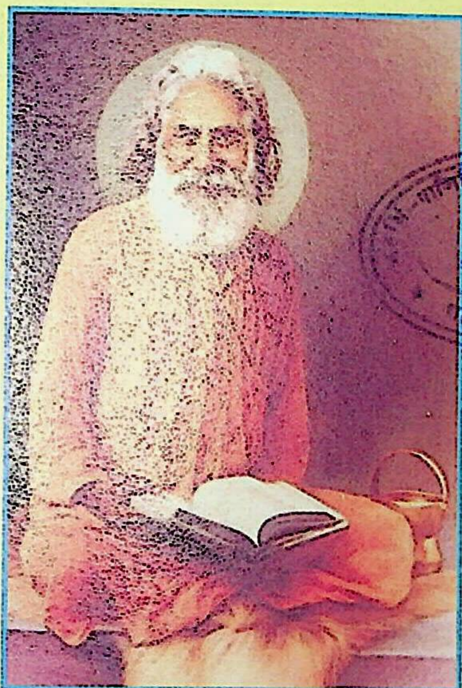
निकल गये जब प्राण, तारा खड़क गईयां
ऊंची भरी उड़ान, तारा खड़क गईयां
सुनने वालों का दिल धड़के,
हो गये सभी हैरान तारा खड़क गईयां.......

प्रेमी आये पड़ोसी आये, कोई रोवे कोई दुःख मनावे
कोई हाथ जोड़ करे प्रणाम, तारा खड़क गईयां
बेटा, बेटी पोते प्यारे, जिन्होंने तन मन धन वारे
न किया प्रभु गुणगान तारा खड़क...........

जीवन में कई परिवर्तन आये, कई हंसाए कई रुलाएं
अन्तर मुख हो, किया न ध्यान तारा खड़क गईयां
नहा धुलाकर खूब सजाया, तख्ते ऊपर बांध सुलाया।
लगे फूल बरसाने, तारा खड़क...........

जिस घर विच कई साल बिताए, प्राण गये तो कोई रख न पाये,
तारा खड़क गईयां
बेटे प्यारे ने आग लगाई भर भर मुट्ठी आहुति पाई
धुआं उड़े असमान, तारा खड़क....

शोक सभा भी खूब मनाई श्रद्धा से
सबको करी विदाई, पहुंच गया ब्रह्म धाम, तारा खड़क....
मन मेरी यही कहानी, अंतरमुख हो प्रभु सार न जानी
अपना आप पहचान, तारा खड़क.....



वीतराग महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

जन्म १८८७—महाप्रस्थान १६ मार्च, १६६७

सरलता—सादगी के प्रतीक—सौम्य सन्त प्रभुआश्रित जी आज से लगभग एक सौ बीस वर्ष पूर्व जिन्होंने निर्धनता के आंचल में नेत्र खोले, तपस्या के आंगन में लोरी सुनी, तपती दुपहरी में पोथी पढ़ी, अनिकेत रह कर गृहस्थी संभाली, भूखे रहकर हरिभजन किया, मौन रहकर आराध्य को रिझाया, साधक बनकर योग को साधा, प्रचारक बनकर यज्ञ को विस्तारा, चिन्तन करके गायत्री को सराहा, पोथी पढ़—पढ़कर जीवन को बांचा, यश अपयश से परे रहकर नाम—धन अर्जित किया और अन्त में पंचतत्व की चदरिया को ज्यों की त्यों धरकर जीवन मुक्त हो गए।

— डा॰ राज बुद्धिराजा

इसी पुस्तक से

प्रभु शरण

हम आए हैं शरण तुम्हारी,
प्रभु रखना तू लाज हमारी।

तेरे चरनों में प्रीती लगावें,
अपना जीवन न व्यर्थ गँवावें। हाँ......
दिल में होवे तेरा प्रेम भारी।। प्रभु .....।।

मेरी नैय्या को पार लगावो,
प्रभु अपना ही अमृत पिलावो। हाँ.....
तेरे द्वारे पे झोली पसारी।। प्रभु .....।।

मन मंदिर में आसन हो तेरा,
दूर कर दो मेरा सब अँधेरा। हाँ.....
तेरी ज्योति की शोभा हो न्यारी।। प्रभु....।।

– शान्ति [illegible]होत्री